Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue March 2021 | Impact Factor 4.115

समृद्ध भारतीयशास्त्र और उनका मनोवैज्ञानिक स्वरूप और महत्व

निशांत सैनी
काउंसलर, जवाहर नवोदय विद्यालय, नवसारी, गुजरात
माधवी
शोधार्थी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सार: भारतीय शास्त्र ओर भारतीय-संस्कृति अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। इसमें मानव-इतिहास के आरंभिक सोपानों के विकास का ज्ञान संकलित है। सामाजिक-वृद्धि एवं ज्ञान के विकास के कारण भारतीय-संस्कृति से दर्शनशास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ।

दर्शनशास्त्र में प्रकृति के सिद्धांतों उनके कारणों ओर सत्य की विवेचना की जाती है। दर्शन यथार्थ की परख के लिए एक विस्तृत दृष्टिकोण उपलब्ध करवाते हैं। दर्शनशास्त्र से ही मनोविज्ञान की उत्पत्ति हुई जिसमें सामान्य दृष्टिकोण का विस्तार, यथार्थ के संबंध में चिंतन के लिए तर्कबुद्धि पर कतर्क और संज्ञान के सिद्धांतों की उत्पत्ति और विकास में सहायता प्राप्त हुई।

भारतीयशास्त्र और मनोविज्ञान का संबंध बहुत गहरा ओर विशेष है। भारतीय शास्त्रों में पदार्थ चेतनाद्वंद (matter-consciousness duality) पर ध्यान केंद्रित करते हैं जबकि पश्चिम में मन-शरीरद्वंद (mind-bodyduality) पर केंद्रित है। भारतीयशास्त्रों के अनुसार दुनिया दो अलग-अलग मौलिक वास्तविकताओं से निर्मित है 'पुरूष ओर और प्रकृति' और ये दोनों एक-दूसरे के बिना कुछ भी नहीं है।

भारतीयशास्त्रों में प्रकृति के 24 तत्त्वों का समावेश बताया गया है जिसमें प्रथम तत्त्व के रूप में बुद्धि को दर्शाया गया है और इसे महातत्त्व माना गया है और आत्म, संज्ञान इत्यादि का विकास माना गया है। यही तत्त्व मनोविज्ञान में पाए जाते हैं लेकिन मनोविज्ञान में इनका वर्णन थोड़ासा सिमटा हुआ है लेकिन भारतीयशास्त्रों में इन सब तत्त्वों का वर्णन विस्तृत स्वरूप में ओर अनेक पहलुओं में व्यक्त किया गया है। मनोविज्ञान को मन का विज्ञान माना गया है जबकि भारतीयशास्त्रों में मन एक विशेष एवं प्रकृति का मुख्य पहलू है। इस प्रकार भारतीयशास्त्र ओर मनोविज्ञान एक-दूसरे से संबंधित है और एक-दूसरे के पूरक है क्योंकि मनोविज्ञान की उत्पत्ति दर्शनशास्त्र से हुई है जो भारतीयशास्त्रों का एक प्रमुख अंग रहा है।

मुख्यबिंदु:- भारतीयशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, आत्म, बुद्धि, मन।

भारतीयशास्त्र एक अमूल्य विरासत है। भारतीयशास्त्रों में मानव-इतिहास के प्रारम्भ के विकास का सम्पूर्ण ज्ञान संकलित है। इसी ज्ञान से दर्शनशास्त्र का प्रादुर्भाव हुआ जो अध्यात्म का मूलाधार है। इसके मूल में भौतिक-जगत के ज्ञान-तत्त्वों के अतिरिक्त निराकार ब्रह्म की सत्यता एवं सर्वव्यापकता सम्बन्धी अध्ययन समाहित है जो भारतीय दार्शनिक विचारधारा की विशाल एवं समृद्ध ज्ञान(अध्ययनदृष्टि) की परिचायक है जो युग-युगांतर से निरंतर चलायमान है।

इस सम्बन्ध में भारतीय और पाश्चात्य स्तर पर विभिन्न शोध-अध्ययन किए गए हैं। दयाकृष्ण (1996) ने प्राचीन भारत के नैतिक, कानूनी, राजनीतिक और सामाजिक-चिंतन का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण किया है जैसा कि वेदों, उपनिषदों, पुराणों, धर्मसूत्रों, मित्रों, जैनों-साहित्य में परिलक्षित होता है। फ्रैंसिनी (2008) ने अपने शोधपत्र में आधुनिक एवं पश्चिमी संस्कृति में विवेक, मन और बुद्धि के शब्दों के उपयोग की तुलना की है जो वर्तमान में कुछ प्राचीन दार्शनिक परंपरा के विपरीत न्यूनतावाद से प्रभावित है।लिस्टर सम सुधीर मनिकम (2008) के अनुसार भारतीय शोधकर्त्ताओं द्वारा भारतीय अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारत में किए गए शोध- अध्ययनों की संख्या काफी कम है। इस अध्याय में भारतीय अवधारणाओं पर शोध करने में कुछ बाधाओं, शोधकर्त्ताओं और उन्हें दूर करने के साधनों की तरफ ध्यान केंद्रित किया है। गिरीश मिश्रा (2012) के अनुसार भारतीय विचार परम्परा की गहराई,ज्ञान और व्यवहारिकता हर स्तर पर सरहानीय रही है जो अब स्वदेशी मनोविज्ञान के रुप में प्रगतिशील हो रही है। मत्थिजस कोर्नेलिससें ने अपने शोध में मनोविज्ञान का सबसे सुन्दर सारांश देते हुए नेतृत्व करने की खोज का वर्णन किया है।जगदीप सिंह हरविंदर सिन्ह (2015) में दार्शनिक साहित्य के निरंतर सुधार, इसकी स्थापना तथा इसेसंगठन में उपयोग किए जाने वाले परिष्कृत विकास पर अवलोकन प्रदान करते है।पीटर सेडलमिएरऔर कुंचापुड़ी श्रीनिवास (2016) ने प्रमुख भारतीय विचार प्रणाली 'समंख्य योग' से संज्ञान एवं चेतना कोमनोवैज्ञानिक सिद्धांत के रूप में प्रतिपादित करने का प्रयास किया है जो पश्चिमी मुखयधारा के सिद्धांत को और अधिक विस्तारित करने में सहायक है।

PURVA MIMAANSA

भारतीयदर्शन

भारतीयशास्त्रों केअनुसार भारतीय-दर्शन का प्रारम्भ वेदों और उपनिषदों से होता है। वेद एवं उपनिषद भारतीय-संस्कृति एवं साहित्य का मूल-स्त्रोत है। वेदों में प्राचीन काव्यों का संकलन है जिसमें उस समय की जीवनशैलियों का समावेश है जो आज भी प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान में भी विभिन्न अवसरों पर वेदमंत्रों का गायन एवं श्रवण किया जाता है। वेदों में विशुद्ध आध्यात्मिक चिंतन वाले भाग को उपनिषद कहाजाता है। उपनिषद व्यवधानरहित, सत, विशिष्ट एवं सम्पूर्ण ज्ञान और चिंतन-मनन का मूल स्त्रोत है जिसे ऋषि अथवा मुनि भी कहागया है। भारतीयशास्त्रों में 108 उपनिषद हैं जो सर्वोच्च मान्यता प्राप्त दर्शनों का संस्कृत-संग्रह है। भारतीयशास्त्रों में प्रश्न, माण्डूक्य, केन, तैतिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और कौषीतिक उपनिषद गद्य में हैं तथा ईश, कठ, श्वेताश्वर उपनिषद पद्य रूप में वर्णित है।

भारतीयशास्त्रों में वेदों का उपनिषद भाग सर्वथा अक्षुण्ण है जिनमें मुख्यतः वेद और उपनिषद अग्रलिखित हैं :-

	वेद		उपनिषद भाग
*	ऋग्वेद	:	ऐतरेयोपनिषद
*	यजुर्वेद	:	बृहदारण्यकोपनिषद।
*	शुक्ल -यजुर्वेद	:	ईशवस्योपनिषद।
*	कृष्ण -यजुर्वेद	:	तैतिरियोप निषद ,कठोपनिषद ,श्वेताश्वरोप निषद ,मैत्रायणी उपनिषद।
*	सामवेद	:	वाष्कल उपनिषद ,छान्दोग्य उपनिषद , केनोपनिषद।
*	अर्थवेद	:	माण्डूक्योपनिषद ,प्रश्नोपनिषद ,मुंडकोपनिषद।

वेदों और उपनिषदों में समाहित साहित्यों में विभिन्न कथाएँ व्याख्यायित की गई हैंजिनमें पिप्पलाद में ब्रह्म, जीव,जगत की कथा,नचिकेता ने भौतिक-सुखों की निस्सारता,सुकेश में सोलह कलाओं से सुशोभित पुरुष एवं वरुण और भृगु में ब्रह्म के स्वरूप मुख्य हैं जिनसे युगांतर में विभिन्न दार्शनिक- विचारधाराओं का प्रादुर्भाव हुआ है। समय की काल-सीमा के आधार पर भारतीय दार्शनिक साहित्य को चार भागों में विभाजित किया जा सकता हैं:-

- **वैदिक काल-** इसमें वेदों से उपनिषदों तक रचित साहित्य समाहित है।
- **महाभारत -** चार्वाक एवं गीता का स्वर्णिम युग।
- **बौद्धकाल -** जैन एवं बौद्ध धर्म युग।
- **उत्तर-बौद्धकाल-** न्याय,वैशेषिक,सांख्य,योग,पूर्व एवं उत्तर मीमांसा-युग।

भारतीयशास्त्र में प्रकृति और पुरुष के मिलन से ही संसार अथवा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति मानी गई हैं। प्रकृति एवं पुरुष का स्वरूप जगत-निरूपण में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहा है। 'प्रकृति ' एक अभूतपूर्व वास्तविकता (अभूतपूर्व यथार्थता) शुद्ध निष्पक्षता,अचेतनता के साथ-साथ सावभौमिक (सर्वस्व) संतुलन का मूल है। पुरुष का स्वरूप चेतन एवं निष्क्रिय-बुद्धि है जो 'सर्वोच्च-स्व' है। प्रकृति एवं पुरुष परस्पर एक -दूसरे की पूरक है। प्रकृति और पुरुष के परस्पर अंतरण से ही आत्म,मन,बुद्धि,चेतन इत्यादि विभिन्न प्रतिरूपों के अध्ययन-श्रृंखला का प्रारम्भ हुआ। इन्हीं के विस्तृत अध्ययनों के रूप में दर्शन एवं मनोविज्ञान के विषय-क्षेत्र की पृष्ठभूमि निर्धारित हुई।

बुद्धि

भारतीयशास्त्रों में प्रकृति-तत्त्वों के रूप में बुद्धि,मन,अहंकार,पंच ऐन्द्रियाँ,पंच कर्मेन्द्रिया,पंच तंत्रमासएवं पंच महाभूतों की विस्तृत विवेचना की गई है जिसमे बुद्धि को प्रथम महातत्त्व के रूप में स्थापित किया गया है। भारतीयशास्त्र में बुद्धि को विवेक कहा गया है। मनोवैज्ञानिक स्वरूप में बुद्धि संज्ञानात्मक-व्यवहारों का एक समुच्चय है जो व्यक्ति अथवा पुरुष को अमूर्त एवं विवेकपूर्ण चिंतन के साथ- साथ प्रकृति (वातावरण) के साथ समायोजन स्थापित करने में सक्षम बनाती है।

PURVA MIMAANSA

आत्म /स्व:

आत्म भारतीयदर्शन की नींव हैं। यह प्रकृति का चेतन भाग है जो अभूतपूर्व यथार्थता (वास्तविकता) से परिपूर्ण है। भारतीयदर्शन में आत्म का स्वरूप सनातन, आध्यात्मिक एवं निराकार है। 'आदि शंकराचार्य' ने आत्म को 'सर्वोच्च स्व' कहा है। भारतीयदर्शन में आत्म के दो स्वरू

परमात्मा सार्वभौमिक- चेतन एवं जीवात्मा व्यैक्तिक चेतन अथवा जीव / पुरुष से सम्बन्धित है। चेतना,सुख,दुःख,द्वेष,इच्छा,प्रत्यन इत्यादि जीवात्मा के गुण हैं। 'कूली' ने 'आत्मन' को समाज से सम्बन्धित मानते हुए कहा 'आत्मन और समाज को जुड़वाँ' माना है जिससे व्यक्ति (जीवात्मा) में 'सामाजिक-आत्मदर्शन' का विकास होता है।

मन

मानवीय-स्व का एक भाग है जिससे मानवीय-व्यवहार की प्रक्रिया प्रसारित होती है। मन के द्वारा होने वाली व्यवहारिक-प्रक्रियाओंमेंमनोदशा,विचार एवं बुद्धि की एक क्रमिक-भूमिका है।

- **मनोदशा -** भावना गठित करती है।
- **विचार-** सोच निर्मित करती है।
- **बुद्धि-** विश्लेषण करती है।

भारतीयदर्शन में मन की अमूर्त अवधारणा में संज्ञान,संकल्प-शक्ति एवं प्रभाव का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

- **संज्ञान-** ये चेतन,अचेतन,ठोस एवं वैचारिक होता हैं।
- **संकल्प शक्ति-** यह मन के तीन भागों में से एक है। यह एक प्राकृतिक-प्रवृति है जिसमें आवेग एवं विभिन्न प्रयास शामिल हैं।
- **प्रभाव-** यह अनुभव से सम्बन्धित हैं जो उद्दीपक के संगठन से कार्य करता है।

भारतीयदर्शन मेंमन के मनोवैज्ञानिक-स्वरूप में भिन्नता हैं जबकि मनोविज्ञान मन अध्ययन तक परिसीमित हैं। मनोविज्ञान में मन के सम्प्रत्यय को व्याख्यायितकरने में सिगमंड फ्रायड का सर्वाधिक योगदान है।मनोविज्ञान में मन के तीन स्वरूप प्रतिपादित हैं:-

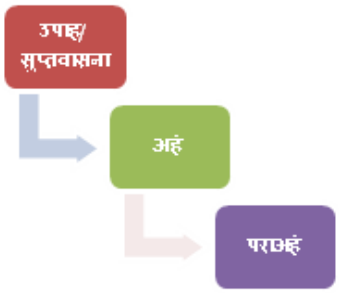

PURVA MIMAANSA

उपाह/ सुप्तवासना

यह व्यक्तित्व-संरचना का असंगठित भाग है जो अत्यंत दुर्गम है क्योंकि इसमें सही-गलत, समय,स्थान का कोई महत्त्व नहीं होता अपितु यह व्यक्तियों की सहजात इच्छाओं का ही प्रतिरूप है जो उसे विभिन्न कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। ये केवल 'आनंद सिद्धांत'पर आधारित कार्य करता है और आनंद की संतुष्टि करता है। उपाह का स्वरूप अचेतन होता है। 'फ्रायड' के 'ईड' को 'कूली' ने 'बुनियादी मानव- स्वभाव' तथा 'मीड' ने 'मैं' कहा है।

- **अहं:-**

यह व्यक्तित्व-संरचना का संगठित भाग है जो 'वास्तविकता सिद्धांत' पर केंद्रित है। यह अंशतः चेतन, अंशतःअचेतन, अंशतः अर्द्ध चेतन होता है। अहं मन का वह भाग है जो उपाह से विकसित होता है और इसका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है।

- **पराअहं:-**

ये आदर्शवादी सिद्धांत पर आधारित है जिसका उद्देश्य पूर्णता है। ये सही,गलत एवं अपराध-बोध को नियंत्रित करता है तथा सामाजिक-रूप से स्वीकृत कार्यों को करने की प्रवृति निर्मित करता है। इसका स्वरूप अहं की भाँति चेतन,अचेतन एवं अर्द्धचेतन हो सकता है। यह व्यक्तित्व-निर्धारण की विभिन्न स्थितियों की पृष्ठभूमि हैं जिसे 'मीड' ने 'मुझे' कहा है जो व्यक्ति में 'सामाजिक-आत्मन' के रूप में मौजूद होता है।

भारतीयशास्त्रों में साहित्य की समृद्ध भारतीयदर्शन परम्परा की प्रतीति होती है क्योंकि यह वैश्विक स्तर पर विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं के उद्भव का आदिस्त्रोत ,मूलाधार एवं प्रमाण है। इसी साहित्य के आधार पर दर्शनशास्त्र यथार्थ की परख के लिए दृष्टिकोण निर्मित करता है जिसके परम् सत्य,प्रकृति(स्वत्व),समाज,मानवीय-चिंतन एवं संज्ञान के नियमों का विवेचन होता है। चिंतन दर्शनशास्त्र का मूल है जो मनुष्य एवं समाज से अविरल रूप से जुड़ा है क्योंकि चिंतन जैविक एवं सामाजिक-विकास से सम्बन्धित मस्तिष्क की उच्चतम उपज है। चिंतन ही नियमों,सिद्धांतों में वस्तुगत-जगत को परिवर्तित करने की संक्रिया (पृष्ठभूमि) प्रदान करता है जिससे मनुष्य का चिंतन वाणी की घनिष्ठता के साथ मूर्त रूप ग्रहण क्र भाषारूप में अभिव्यक्त होता है। दर्शनशास्त्र की इसी अध्ययन-परम्परा से मनोविज्ञान की उत्पत्ति होती है। मनोवज्ञान मन का विज्ञानं है। भारतीयशास्त्रों में मन को प्रकृति का प्रमुख एवं विशिष्ट पहलू माना गया है। भारतीयदर्शन में मन से आगे आत्म को सर्वोच्च-स्व के रूप में अध्ययन किया गया है। मूलरूप से भारतीयदर्शन परम्परा एवं मनोविज्ञान एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं एवं परस्पर पूरक हैं।

संदर्भ सूची

ब्लमबर्ग, ओ (2011) - संज्ञानात्मक इंजीनियरिंग के लिए अनुभूति की अवधारणा।

कॉर्नेलिसन मैथिज - मनोविज्ञान: पांच प्रमुख भारतीय योगदान।

फ्रांसिनी ए नॉण्टीटा, एम.डी. (2008) - चेतना, मन और बुद्धि: कुछ शोध और नोट्स।

फ्रायड सिगमंड (1933) -मनो-विश्लेषण पर नया परिचयात्मक व्याख्यान।

गेलार्ड (1963) - मनोविज्ञान का मौलिक।

कृष्णा दया (1996) - शास्त्रीय भारतीय विचारों की समस्यात्मक और वैचारिक संरचना: मनुष्य, समाज और प्रेम के बारे में।

हार्ट डब्लू डी (1997) - एस न्यूटनप्लान (सं) में द्वैतवाद, मन के दर्शन का विस्तार।

PURVA MIMAANSA

हॉग एम.ए. ए ब्रम्स, डी एंड मार्टिन जी.एन.(2010) - सामाजिक अनुभूति और मार्टिन जीएन कार्लसन, एनआर बुस्किट, डब्ल्यू.(ईडी.) मनोविज्ञान में रवैया।

लेसी ए.आर. (1996) - दर्शन का शब्दकोश।

मणिकम लिस्टर सैम सुधीर (2008) - मनोविज्ञान की भारतीय अवधारणाओं पर शोध: भविष्य की कार्रवाई के लिए प्रमुख चुनौतियां और परिप्रेक्ष्य।

मीड, जॉर्ज हर्बर्ट (1934) - माइंड, सेल्फ एंड सोसाइटी।

मिश्रा गिरीश्वर और आनंद सी परांजपे (2012) - आधुनिक भारत में मनोविज्ञान।

राव वेंकोबा ए (2002) - माइंड इन इंडियन दर्शन।

रूथ स्नोडेन (2006) - अपने आप को सिखाएं, फ्रायड, एमसी ग्रेहिल।

रूथ मेयर्स (2007) - मॉड्यूल 44 वें साइको-एनालिटिकल परिप्रेक्ष्य।

सेडलमीयर पीटर एंड श्रीनिवास कुंचपुड़ी (2016) - प्राचीन भारतीय विचार प्रणाली में अनुभूति और चेतना के सिद्धांत वर्तमान पश्चिमी सिद्धांत और खोज के लिए कैसे व्यवस्थित हैं?

सिंह, जे.पी. (2001) - समाजशास्त्र: अवधारणाएँ और सिद्धांत।

सिंह जगदीप और सिंह हरविंदर (2015) - निरंतर सुधार दर्शन साहित्य समीक्षा और निर्देश।

वुट्रैफ प्रेमैक डी.जी. (1978)- क्या चिंपैंजी के दिमाग का एक सिद्धांत है? व्यवहार और मस्तिष्क विज्ञान।

Slideshare.net/rajivcaas/indian-philosophy.